स्वयं सिद्धा

राज नहीं करना सेवा करना

स्वयं सिद्धा

महिला संगठन मध्य प्रदेश

स्वयं सिद्धा

राज नहीं करना सेवा करना

स्वयं सिद्धा

महिला संगठन मध्य प्रदेश

अध्यक्ष डॉ. प्रतिभा तिवारी सागर

सचिव सौम्या तिवारी सागर

स्वयं सिद्धा

*परिचय:**

स्वयं सिद्धा एक विशेष नारी संगठन है, जिसका उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें उनके अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति जागरूक करना है। यह संगठन उन महिलाओं के लिए एक मंच प्रदान करता है जो आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता हासिल करना चाहती हैं। स्वयं सिद्धा का मानना है कि यदि महिलाएं सक्षम होती हैं, तो वे अपने परिवार और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

स्वयं सिद्धा

उद्देश्य:
स्वयं सिद्धा का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना है। संगठन निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य करता है:

1. **शिक्षा और जागरूकता:**
   स्वयं सिद्धा विभिन्न कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन करता है, जहां महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, और वित्तीय प्रबंधन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

2. **स्व रोजगार:**
   संगठन महिलाओं को आत्मनिर्भर के अवसरों के बारे में जानकारी देता है और उन्हें व्यवसाय शुरू करने में सहायता करता है। यह महिला उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।

3. **सामाजिक समर्थन:**
   स्वयं सिद्धा, महिलाओं की समस्याओं को सुनने और उनके समाधान के लिए एक सुरक्षित जगह प्रदान करता है। संगठन विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को एकजुट करने का काम करता है।

स्वयं सिद्धा

4. **स्वास्थ्य सेवा:**
संगठन में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मुफ्त चिकित्सा जांच, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

सफलता की कहानियाँ:
स्वयं सिद्धा के कई सदस्यों ने अपनी कठिनाइयों को पार करते हुए सफलतापूर्वक अपने व्यवसाय स्थापित किए हैं। इनमें से कई महिलाएं अब अपने परिवारों का भरण-पोषण कर रही हैं और समाज में प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं।

स्वयं सिद्धा

निष्कर्ष:

स्वयं सिद्धा न केवल एक संगठन है, बल्कि यह महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाने का एक आंदोलन है। यह संगठन एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण कर रहा है, जहां महिलाएं न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, बल्कि वे समाज के विकास में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में यह संगठन एक महत्वपूर्ण पहल है, जो न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक बदलाव का कारण भी बन रहा है।

स्वयं सिद्धा से जुड़कर महिलाएं अपनी क्षमता को पहचान सकती हैं और समाज में अपने हक के लिए लड़ना सीख सकती हैं।

स्वयं सिद्धा

नारी शक्ति और पर्यावरण का अद्भुत मेल

नारी शक्ति और पर्यावरण का आपस में गहरा संबंध है। महिलाएं परिवार, समुदाय और समाज में अपनी भूमिका के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन की अग्रणी कड़ी रही हैं।महिलाओं और पर्यावरण का गहरा रिश्तामहिलाओं का जीवन प्राकृतिक संसाधनों—जैसे जल, जंगल, मिट्टी एवं ऊर्जा—पर अत्यधिक निर्भर रहता है। ग्रामीण भारत में महिलाएं रोज़मर्रा के कार्यों के लिए लकड़ी, पानी, चारा जैसी चीज़ें जुटाती हैं, जिससे वे सीधे पर्यावरण से जुड़ाव महसूस करती हैं। इसी वजह से महिलाएं पर्यावरणीय संकटों को सबसे पहले महसूस करती हैं और इनके समाधान की दिशा में उत्सुक रहती हैं।नारी शक्ति की पर्यावरण संरक्षण में भूमिकामहिलाएं जल और वन-संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा, पारंपरिक बीजों व जैविक खेती को बढ़ावा देने, एवं कचरा प्रबंधन जैसे कार्यों में सबसे आगे रहती हैं।गांवों में जंगल संरक्षण समितियों की अगुआई महिलाएं करती हैं, जो स्थानीय वन, जल स्रोतों व जैव विविधता की देखरेख करती हैं।महिलाएं वृक्षारोपण, जल संचयन, प्राकृतिक खेती, अपशिष्ट प्रबंधन, आदि अभियानों का नेतृत्व कर ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों में हरित जीवनशैली को अपनाने की प्रेरणा देती हैं।ऐतिहासिक मिसाल और आंदोलनभारत के चिपको आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी विश्व प्रसिद्ध है, जहां गौरा देवी और गांव की महिलाओं ने पेड़ों की रक्षा के लिए उन्हें गले से लगा लिया था। इससे पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महिला नेतृत्व का नया अध्याय जुड़ा।ईको-फेमिनिज़्म: नारीवाद और प्रकृति'ईको फेमिनिज़्म' (Eco-Feminism) विचारधारा के अनुसार, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और महिलाओं का शोषण दोनों ही सामाजिक समस्याएं हैं, और इनके समाधान में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। महिलाएं पर्यावरण के प्रति अपनी संवेदनशीलता और देखभाल से न सिर्फ प्राकृतिक संतुलन बनाए रखती हैं, बल्कि आपदाओं से निपटने और सतत् विकास का मार्ग भी प्रशस्त करती हैं।निष्कर्षनारी शक्ति के बिना पर्यावरण संरक्षण की कल्पना अधूरी है। महिलाएं प्रकृति की संरक्षक, पोषक और प्रेरक हैं। समाज व नीति-निर्माताओं के लिए यह जरूरी है कि वे महिला नेतृत्व को सशक्त बनाएं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में उनकी भागीदारी बढ़ाएं।यह सामूहिक प्रयास ही असली 'हरित क्रांति' है, जिसमें नारी शक्ति की चेतना, संवेदना और नेतृत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

स्वयं सिद्धा

नारी शक्ति का वृक्षारोपण से आयुर्वेदिक ज्ञान

नारी शक्ति को वृक्षारोपण और आयुर्वेदिक ज्ञान से जोड़ना महिलाओं के सशक्तिकरण, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता के लिए एक प्रेरणादायक कदम है।नारी और वृक्षारोपण: धरती माता की साधनामहिलाएं परंपरागत रूप से प्रकृति की रक्षक रही हैं। वृक्षारोपण में भागीदारी न सिर्फ पर्यावरण-संरक्षण का माध्यम है, बल्कि यह सामूहिकता, जिम्मेदारी और प्रकृति के साथ गहरा संबंध भी सृजित करता है। जब महिलाएं औषधीय और आयुर्वेदिक पौधों का रोपण करती हैं, तो वे आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वास्थ्यवर्धक वातावरण तैयार करती हैं।आयुर्वेदिक पौधे: नारी स्वास्थ्य के लिए अमृतआयुर्वेद में कई ऐसे पौधों का वर्णन है, जो विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माने जाते हैं। जैसे:अशोक: मासिक धर्म की अनियमितता और गर्भाशय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी। शतावरी: हार्मोन संतुलन, प्रजनन स्वास्थ्य और स्तनपान को बढ़ाने में सहायक।घृतकुमारी (एलोवेरा): सौंदर्य और ऊर्जा बढ़ाने वाली औषधि।तुलसी, गिलोय, ब्राह्मी, शंखपुष्पी: रोग प्रतिरोधक क्षमता और मानसिक शांति के लिए उपयोगी।वृक्षारोपण, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरतायदि महिलाएं अपने घर, समुदाय या गांव में विटामिन और आयुर्वेदिक गुणों से भरपूर पौधों का रोपण करें तो वे घरेलू स्वास्थ्य देखभाल में आत्मनिर्भर हो सकती हैं। औषधीय पौधे परिवार को सामान्य बीमारियों से बचाव, सौंदर्य वर्धन एवं प्रसूति काल की जटिलताओं में सहायता करते हैं।प्रेरणादायक संदेश"हर महिला द्वारा बोया गया एक औषधीय पौधा न केवल धरती को हरियाली देता है, बल्कि परिवार और समाज को स्वस्थ जीवन का वरदान भी प्रदान करता है।"इस प्रकार, नारी शक्ति जब वृक्षारोपण और आयुर्वेद को अपनाती है तो वह प्रकृति, स्वास्थ्य और समाज-निर्माण का सशक्त सेतु बन जाती है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

3 अगस्त 5000 वृक्षारोपण

यहाँ "नारी शक्ति और वृक्षारोपण अभियान" पर एक हिंदी लेख प्रस्तुत है—नारी शक्ति और वृक्षारोपण : हरियाली के साथ शक्ति का संगममध्य प्रदेश की धरती अपने संस्कृति, परंपरा और जनशक्ति के लिए जानी जाती है। आज यह धरती नारी शक्ति और पर्यावरण संरक्षण—दोनों के संगम की साक्षी बन रही है। जब महिलाएँ वृक्षारोपण के अभियान से जुड़ती हैं, तो यह केवल पेड़ लगाने का कार्य नहीं रह जाता, बल्कि यह "जीवन देने की शक्ति" का प्रतीक बन जाता है।नारी स्वयं एक सृजनकर्ता है—जो जीवन को जन्म देती है, उसे संवर्धित करती है। उसी तरह वृक्ष भी जीवन का आधार हैं—वे छाया, हवा, जल और संतुलन प्रदान करते हैं। जब नारी अपने हाथों से पेड़ लगाती है, तो वह धरती माँ के आंचल को हरियाली से भर देती है।मध्य प्रदेश के कई जिलों में अब महिलाएँ संगठित होकर वृक्षारोपण के अभियान चला रही हैं। गाँवों में स्व-सहायता समूह, महिला मंडल और छात्राएँ मिलकर एक नई हरित पहल शुरू कर रही हैं। इन प्रयासों के तहत हर महिला न केवल एक पेड़ लगाती है बल्कि उसे "अपना परिवार सदस्य" मानकर उसकी देखभाल भी करती है।यह पहल "शक्ति का एकत्रीकरण" भी है। जब महिलाएँ एक साथ आती हैं—वे एक-दूसरे की प्रेरणा बनती हैं। वृक्षारोपण के माध्यम से वे साझेदारी, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता की भावना को भी प्रबल करती हैं। यह केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण का भी सूत्र बन जाता है।इस मिशन का उद्देश्य है—मध्य प्रदेश की मिट्टी को हरियाली से आच्छादित करना, और साथ ही महिलाओं में नेतृत्व, आत्मविश्वास तथा पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भाव पैदा करना।नारी शक्ति और वृक्षारोपण—दोनों मिलकर एक नई जीवनधारा का निर्माण कर रहे हैं। यह अभियान प्रकृति और नारी, दोनों की सृजनात्मक शक्ति का सुंदर उदाहरण है, जो हमें सिखाता है कि स्थायी विकास तभी संभव है जब शक्ति और संवेदना एक साथ चलें।क्या आप चाहेंगे कि मैं इस लेख का छोटा स्लोगन या नारा भी जोड़ दूँ जो पोस्टर या अभियान के लिए उपयुक्त हो?

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

18 मार्च 2024महिला मंडल फाग उत्सव. सागर

फाग उत्सव महिलाओं को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। देवी-देवताओं की पूजा, भजन-कीर्तन और पारंपरिक नृत्य के माध्यम से महिलाएँ अपने बच्चों और समाज के अन्य सदस्यों को भी संस्कृति का महत्व समझाती हैं। त्योहार आयोजन से सांस्कृतिक चेतना और अपनी जड़ों से संबंध मज़बूत होता है।सामाजिक लाभऐसे आयोजनों से महिलाओं को एक-दूसरे से मिलने, संवाद और सहयोग का अवसर मिलता है। मेल-मिलाप और सहभागिता बढ़ती है, जिससे आपसी भाईचारा और एकता में वृद्धि होती है। कई बार महिलाएँ अपने अनुभव, कौशल और प्रतिभा को भी प्रदर्शित करती हैं, जिससे सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है।आत्मविश्वास और आनंदफाग उत्सव में भाग लेने से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ता है। भगवान के साथ फूलों और रंगों की होली खेलने, नृत्य और गीत प्रस्तुत करने से मन में उल्लास और संतुष्टि का भाव आता है। अनेक महिलाएँ बताती हैं कि ऐसे आयोजनों में भाग लेकर जीवन में नई ऊर्जा मिलती है और उनका मानसिक तनाव दूर होता है।भारतीयता और पारिवारिक मूल्यों का संरक्षणमेल मंडल फाग उत्सव के माध्यम से नए पीढ़ी को भारतीय परंपराओं से जोड़ती हैं। यह आयोजन पारिवारिक एकता, आपसी सहयोग और समाज में अच्छी भावनाएँ बढ़ाने का माध्यम बनता है। छोटे बच्चे भी इन आयोजनों में भाग लेकर अपने संस्कारों को और प्रगाढ़ करते हैं।इस प्रकार, महिला मंडल द्वारा फाग उत्सव का आयोजन समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत स्तर पर महिलाओं के लिए अत्यंत लाभकारी होता है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

7 अप्रैल 2025 मेकअप की वर्कशॉप. सागर

मेकअप की वर्कशॉप करने से शक्ति के रोजगार में कई बड़े फायदे होते हैं, जिससे न सिर्फ आत्मनिर्भरता बढ़ती है, बल्कि कमाई के नए रास्ते भी खुलते हैं।स्किल डेवलपमेंट और आत्मविश्वासमेकअप की वर्कशॉप करने से प्रोफेशनल स्किल्स सीखने को मिलती हैं, जिससे कोई भी महिला या शक्ति आत्मनिर्भर बन सकती है। मेकअप सीखकर खुद पर विश्वास बढ़ता है, जिससे वह अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है।रोजगार के विविध अवसरमेकअप आर्टिस्ट के रूप में ब्यूटी सैलून, , ब्राइडल स्टूडियो या फिल्म-टीवी इंडस्ट्री में जॉब मिल सकती है।फ्रीलांसर या खुद का मेकअप स्टूडियो/बिजनेस शुरू कर सकती है, जिससे अपना बॉस बनने का मौका मिलता है।इंटरनेशनल सर्टिफिकेट मिलने पर विदेश में भी रोजगार के मौके मिलते हैं।आर्थिक मजबूतीसीधे-सीधे रोजगार जुड़ने से नियमित आय शुरू होती है। शुरुआत में महीने के 20-30 हजार रुपये तक कमाई संभव है, और अनुभव के साथ कमाई और बढ़ती जाती है।रचनात्मकता और पर्सनलिटी डेवेलपमेंटमेकअप की फील्ड रचनात्मकता से भरी है। इससे न सिर्फ प्रोफेशनल क्रिएटिविटी बढ़ती है, बल्कि पर्सनल ग्रूमिंग और व्यक्तित्व में भी निखार आता है।नई-नई तकनीक और ट्रेंड्स से अपडेटवर्कशॉप्स में नए ट्रेंड्स और लेटेस्ट टेक्नोलॉजी सीखने को मिलती है, जिससे बाजार की मांग के अनुसार अपने आपको अपडेट रखा जा सकता है।छोटे निवेश में बड़ा फायदासर्टिफाइड कोर्स या वर्कशॉप में निवेश कम है, जबकि इसका दीर्घकालिक फायदा बहुत ज्यादा होता है—आजीवन उपयोगी स्किल और कई रोजगार विकल्प मिलते हैं।इस तरह, मेकअप की वर्कशॉप नारी शक्ति को आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से सशक्त बनाती है और रोजगार के क्षेत्र में नए आयाम खोलती है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

8 मई 2024 मातृ दिवस पर मेरी मां कार्यक्रम सागर

मातृ दिवस पर कार्यक्रम करने से अनेक फायदे होते हैं। यह दिवस माताओं के प्रति सम्मान, प्रेम, और कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर होता है। मातृ दिवस के कार्यक्रम से मातृत्व के महत्व को समझाने, माताओं के योगदान को मान्यता देने और समाज में उनके रोल को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। इस दिन बच्चों और परिवार वालों को अपनी माताओं के प्रति प्यार और कृतज्ञता दिखाने का अवसर मिलता है, जिससे पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं। बच्चों में संस्कार और सम्मान की भावना विकसित होती है और माताओं के प्रति आदर बढ़ता है।मातृ दिवस कार्यक्रम के लाभमाताओं के प्रति सम्मान और आदर बढ़ता है जो पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है।मातृत्व के महत्व को समाज के सामने प्रभावी रूप से रखा जाता है।बच्चों को मां के योगदान का अहसास और उनके प्रति कृतज्ञता सिखाई जाती है।मातृ दिवस कार्यक्रम से परिवार में प्रेम, सौहार्द्र और सहानुभूति की भावना प्रबल होती है।यह माताओं को खुश और सम्मानित महसूस कराता है, जिससे उनका मनोबल बढ़ता है।सामाजिक और मानसिक प्रभावमातृ दिवस के कार्यक्रम से माताओं का स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब माताएं सम्मानित और सराही जाती हैं तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, जो परिवार और समाज के लिए लाभकारी होता है। यह कार्यक्रम माताओं को प्रेरित करता है कि वे अपने और परिवार के लिए स्वस्थ और खुशहाल जीवन बनाए रखें।इस प्रकार, मातृ दिवस पर कार्यक्रम आयोजित करने से न केवल माताओं को सम्मान मिलता है बल्कि परिवार और समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। यह कार्यक्रम प्रेम, सम्मान और कृतज्ञता के संदेश को फैलाने का एक सुंदर माध्यम हे

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

10 जून। 2024 आत्मनिर्भर पर टॉक शो सागर

महिला द्वारा आत्मनिर्भर पर टॉक शो के फायदेमहिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में टॉक शो एक प्रभावी माध्यम साबित हो सकते हैं। ऐसे टॉक शो महिलाओं को सशक्त बनाने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने और उन्हें समाज में उनकी भूमिका को बेहतर समझाने में मदद करते हैं। आत्मनिर्भरता से महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, बल्कि सामाजिक और मानसिक रूप से भी मजबूत बनती हैं।टॉक शो के फायदेप्रेरणा और जागरूकता बढ़ाना

टॉक शो में सफल महिलाओं की कहानियां सुनकर अन्य महिलाएं प्रेरित होती हैं। इससे उन्हें अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रेरणा मिलती है। इसके अलावा, आत्मनिर्भर बनने के विभिन्न रास्तों और अवसरों की जानकारी भी मिलती है।सामाजिक बांधनों का टूटना

टॉक शो महिलाओं के सामने उनके अधिकारों, शिक्षा, रोजगार, और सुरक्षा के विषय में खुलकर चर्चा करते हैं। इससे पारंपरिक सोच टूटती है और महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिलाने में मदद मिलती है।नेटवर्किंग और संसाधन उपलब्धता

टॉक शो में महिलाएं अपने अनुभव साझा करती हैं और आपस में जुड़ती हैं। इससे वे विभिन्न संसाधनों, प्रशिक्षणों और रोजगार अवसरों तक पहुंच बनाती हैं।आत्मविश्वास और संचार कौशल में सुधार

टॉक शो में भाग लेने के दौरान महिलाएं बोलने और अपनी बात रखने का अभ्यास करती हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे बेहतर संवाद स्थापित कर पाती हैं।समाज में महिला स्थिति में सुधार

जब महिलाएं आत्मनिर्भर बनती हैं, तो उनका परिवार और समाज भी स्थिर और खुशहाल होता है। टॉक शो इस दिशा में सामाजिक बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम हैं।इस प्रकार, महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने पर टॉक शो एक प्रेरणादायक और संवादात्मक मंच है, जो उनके विकास और समाज में उनकी भागीदारी को मजबूती प्रदान करता है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

16 जून जबलपुर संस्कृत परिधान कार्यक्रम

संस्कृत परिधान के फायदे पर एक आर्टिकल प्रस्तुत है:संस्कृत परिधान, यानी पारंपरिक भारतीय वस्त्र, न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत और पहचान का प्रतीक हैं, बल्कि इनके कई फायदे भी हैं। भारतीय संस्कृति में परिधान का विशेष महत्व है क्योंकि यह न केवल زیب ावट का साधन है, बल्कि जीवनशैली, स्वास्थ्य और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का भी प्रतिबिंब होता है।संस्कृत परिधान के फायदेप्राकृतिक और स्वास्थ्यवर्धक: संस्कृत परिधान में आमतौर पर सूती, रेशमी, ऊनी और कापस जैसे प्राकृतिक फाइबर होते हैं, जो शरीर को सांस लेने देते हैं और त्वचा के लिए हितकारी होते हैं। ये कपड़े गर्मी में पसीना सोखते हैं और ठंड में गर्माहट बनाए रखते हैं, जिससे स्वास्थ्य में सुधार होता है।परंपरा और संस्कृति का संरक्षण: संस्कृत परिधान पहनना भारतीय सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने का एक तरीका है। ये परिधान हमारी प्राचीन परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों को समेटे होते हैं, जो हमें अपनी जड़ों से जोड़े रहते हैं।आध्यात्मिक और नैतिक महत्व: संस्कृत वस्त्रों का उपयोग कई धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजनों में होता है। इन्हें पहनने से व्यक्ति को शांति, संयम, और आत्मिक शुद्धि की अनुभूति होती है, जो मानसिक और आत्मिक विकास में सहायक है।सौंदर्य और सरलता का संगम: संस्कृत परिधान अपने रंग, बनावट और डिजाइनों में प्राकृतिक सौंदर्य और सरलता का मेल होते हैं। ये न केवल देखने में आकर्षक होते हैं, बल्कि पहनने में भी आरामदायक होते हैं।स्थायित्व और पर्यावरण मित्र: पारंपरिक संस्कृत वस्त्र टिकाऊ होते हैं और इनका उत्पादन पर्यावरण के अनुकूल होता है, जिससे इनका पुनः उपयोग और रिसाइकलिंग आसानी से किया जा सकता है, यह पर्यावरण संरक्षण में योगदान देता है।संक्षेप में, संस्कृत परिधान न केवल एक बाहरी स्वाभिमान हैं, बल्कि वे हमें हमारी संस्कृति, स्वास्थ्य और पर्यावरण से जोड़ने वाले एक माध्यम हैं। इसलिए इनका संरक्षण और प्रचार-प्रसार आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस अमूल्य धरोहर का लाभ उठा सकें।यह आर्टिकल संस्कृत परिधान के सांस्कृतिक, स्वास्थ्यवर्धक तथा पर्यावरणीय लाभों को स्पष्ट करता है और इनके महत्व को उजागर करता है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

21 जून 2024 गुरु पूर्णिमा महोत्सव जबलपुर महाकौशल यूनिवर्सिटी

गुरु पूर्णिमा पर नारी शक्ति का आयोजनगुरु पूर्णिमा वह दिन है जब हम अपने जीवन में मार्गदर्शन देने वाले गुरुजनों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह केवल आध्यात्मिक गुरुओं का ही नहीं, बल्कि उन सभी व्यक्तित्वों का सम्मान करने का अवसर है जिन्होंने हमें कुछ सिखाया या प्रेरित किया है। इस वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर "नारी शक्ति" के विशेष आयोजन का उद्देश्य महिलाओं के योगदान, नेतृत्व और शिक्षण के महत्व को रेखांकित करना है।आयोजन का उद्देश्यइस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज की सभी महिलाओं को यह संदेश देना है कि प्रत्येक महिला अपने आप में एक गुरु है। वह अपने अनुभवों, संघर्षों और सफलताओं के माध्यम से दूसरों को दिशा और हौसला देती है।कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँमहिला गुरुओं को सम्मान: शिक्षा, कला, समाजसेवा और प्रशासन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को "नारी गुरु सम्मान" से सम्मानित किया जाएगा।प्रेरक वक्तव्यों का सत्र: समाज में बदलाव लाने का कार्य कर रही प्रेरक महिला वक्ताओं द्वारा अपने अनुभव साझा किए जाएंगे।सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ: महिलाओं के सामूहिक नृत्य, गायन और कविता पाठ के माध्यम से नारी शक्ति का रंगारंग प्रदर्शन किया जाएगा।स्वरोजगार और शिक्षा पर कार्यशाला: महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन सत्र आयोजित होंगे।आयोजन का संदेशइस आयोजन के माध्यम से यह संदेश दिया जाएगा कि जैसे गुरु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं, वैसे ही नारी भी सृजन, संस्कार और प्रेरणा की प्रतीक है। गुरु पूर्णिमा का यह पर्व नारी की शक्ति, संवेदना और समर्पण को याद करने का अवसर बन सकता है।क्या आप चाहेंगे कि यह लेख किसी स्थानीय कार्यक्रम (जैसे विद्यालय या सामुदायिक मंच) के लिए अनुकूल बनाया जाए?

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

26 27 जून फाउंटेन मेकिंग वर्कशॉप

यहाँ नारी सशक्तिकरण के लिए आयोजित आर्ट एंड क्राफ्ट की फाउंटेन वर्कशॉप पर एक संक्षिप्त हिंदी लेख प्रस्तुत है:नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक कदम – फाउंटेन आर्ट एंड क्राफ्ट वर्कशॉपमहिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के उद्देश्य से हाल ही में एक विशेष फाउंटेन आर्ट एंड क्राफ्ट वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप का मुख्य लक्ष्य महिलाओं को कला और हस्तशिल्प के माध्यम से आत्मरोजगार के अवसर प्रदान करना था।वर्कशॉप में प्रतिभागियों ने आकर्षक फाउंटेन, डेकोरेटिव आइटम और उपयोगी क्राफ्ट प्रोडक्ट बनाना सीखा। प्रशिक्षकों ने बताया कि थोड़ी सी कल्पनाशीलता और मेहनत से घर पर ही धंधा शुरू किया जा सकता है। इस पहल ने कई महिलाओं में आत्मविश्वास और रचनात्मक ऊर्जा का संचार किया।कला के माध्यम से आर्थिक स्वतंत्रता का यह प्रयास नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है। इस तरह की वर्कशॉप न केवल हुनर को बढ़ावा देती हैं, बल्कि महिलाओं को यह विश्वास भी दिलाती हैं कि वे अपने दम पर जीवन में आगे बढ़ सकती हैं।क्या आप चाहेंगे कि मैं इस लेख को प्रेस रिलीज़ या सोशल मीडिया पोस्ट के रूप में तैयार कर दूँ?

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

18 अगस्त 2024 फिटनेस के साथ भक्ति का रंग कार्यक्रम. सागर

—भक्ति और फिटनेस का संगम: महिला मंडल के लिए एक नई ऊर्जाआध्यात्मिकता और स्वास्थ्य, दोनों ही जीवन के दो ऐसे स्तंभ हैं जो व्यक्ति को अंदर और बाहर से संतुलित रखते हैं। जब किसी मंडल का कार्यक्रम भक्ति के साथ फिटनेस के रंग में रंग जाता है, तो यह न केवल मानसिक शांति लाता है बल्कि शारीरिक स्फूर्ति भी प्रदान करता है। इस तरह का आयोजन महिला मंडल को एक नई दिशा और पहचान दे सकता है।मंडल को जोड़ने के तरीकेसुबह की सामूहिक योग सत्रों के साथ भजन और मंत्रोच्चार: योगासन करते हुए हल्के-फुल्के भक्ति गीत या मंत्र गाने से वातावरण सकारात्मक बनता है और महिलाएं एक साथ मानसिक व शारीरिक रूप से जुड़ती हैं।'फिटनेस यात्रा' के रूप में प्रभात फेरी: नियमित प्रभात फेरी में महिला मंडल भक्ति गीत गाते हुए चल सकते हैं। इससे फिटनेस भी बढ़ेगी और समाज में भक्ति का संदेश भी पहुंचेगा।डांस फिटनेस को भक्ति रस से जोड़ना: भजन-कीर्तन की धुनों पर गरबा, नृत्य योग या ज़ुम्बा जैसी एक्टिविटीज़ से मज़ेदार फिटनेस वातावरण बनेगा।साप्ताहिक 'सेहत और सजगता' चर्चा: प्रत्येक सप्ताह मंडल स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता से जुड़े विषयों पर संवाद करे, जिससे फिटनेस के साथ मानसिक संतुलन भी बढ़े।महिला मंडल को मिलने वाले लाभस्वास्थ्य और आत्मविश्वास में वृद्धि: नियमित गतिविधियों से महिलाएं अधिक ऊर्जा से भरपूर और आत्मनिर्भर महसूस करती हैं। सामुदायिक बंधन मज़बूत होना: एक साथ भक्ति और फिटनेस करने से सदस्यों के बीच अपनापन और सहयोगभाव बढ़ता है।मानसिक शांति और तनाव मुक्ति: भक्ति संगीत और ध्यान के माध्यम से महिलाओं को मानसिक स्थिरता मिलती है।नेतृत्व और आयोजन क्षमता में विकास: कार्यक्रम की योजना बनाने, संचालन और प्रशिक्षण देने से महिलाएं नेतृत्व कौशल सीखती हैं।सकारात्मक जीवनशैली का प्रसार: इस पहल से मंडल समाज में स्वास्थ्य, अनुशासन और भक्ति के संतुलित संदेश का प्रसार कर सकता है।क्या आप चाहेंगे कि मैं इस लेख को और प्रचारात्मक शैली (जैसे ब्रोशर या पोस्टर सामग्री) में रूपांतरित कर दूँ?

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

17 18 अक्टूबर. 2024 अहिल्या माता पर चित्रकला प्रदर्शनी. जबलपुर

कार्यक्रम का उद्देश्यअहिल्या देवी पर आधारित इस चित्रकला प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य उनके जीवन और कार्यों को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है। इस प्रदर्शनी में उनके द्वारा बनाए गए मंदिरों, धर्मस्थलों और सामाजिक कार्यों से जुड़ी चित्रकारी प्रदर्शित की जाती है। साथ ही, यह प्रदर्शनी महिलाओं के सशक्तिकरण और समाज सेवा के महत्व को भी उजागर करती है

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

16 नवंबर 2024अंकूट महोत्सव सागर

अंकूट महोत्सव भारतीय संस्कृति का एक ऐसा पर्व है जो सामूहिकता, अन्न के प्रति कृतज्ञता और आध्यात्मिक एकता का संदेश देता है। इस अवसर पर जब मातृशक्ति एकत्रित होकर आयोजन करती है, तो यह न केवल परंपराओं को जीवंत रखता है बल्कि समाज में महिला सशक्तिकरण की भावना को भी मज़बूती देता है।मातृशक्ति की भूमिकाअंकूट महोत्सव में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे इस आयोजन की आत्मा होती हैं—विभिन्न पकवान तैयार करना, पूजा-सामग्री सजाना, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन करना उनकी सहभागिता को दर्शाता है। इससे महिलाओं में आत्मविश्वास, संगठितता और नेतृत्व की भावना बढ़ती है।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

18 दिसंबर 2024 मेकअप वर्कशॉप एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर

आज के समय में आत्मनिर्भरता केवल आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मविश्वास, कौशल और व्यक्तित्व विकास का भी प्रतीक बन चुकी है। इसी दिशा में मेकअप वर्कशॉप महिलाओं और युवतियों के लिए एक प्रभावी माध्यम बन रही हैं, जहाँ वे अपने हुनर को निखारकर रोजगार और आत्मसम्मान की नई राहें बना रही हैं।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

11 मार्च 2025 फाग उत्सव, सागर

फाग उत्सव और रंग उत्सव भारतीय परंपरा के ऐसे जीवंत पर्व हैं जो जीवन में उमंग, रंग और एकता का संचार करते हैं। यह केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि समाज में प्रेम, सौहार्द और संस्कृति की गहराई को अनुभव करने का अवसर भी है।महिला मंडल द्वारा इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को एक सूत्र में बांधना, उन्हें अपनी परंपराओं से जोड़ना और आत्मविश्वास के साथ समाज में सशक्त भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना है

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

22 अगस्त2025 कृष्णाजन्मोत्सव सागर

कृष्ण जन्मोत्सव केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने और सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने का अवसर भी है। इस शुभ अवसर पर महिला मंडल द्वारा एकत्रित होकर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना, न केवल उत्सव की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि महिलाओं में संगठन, आत्मविश्वास और रचनात्मकता की भावना को भी प्रोत्साहित करता है।कार्यक्रम की रूपरेखामहिला मंडल इस उत्सव में पारंपरिक और आधुनिक दोनों रूपों का सुंदर संगम प्रस्तुत कर सकता है।भजन संध्या: भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े भक्तिमय भजनों का सामूहिक गायन।नृत्य-नाटिका: रासलीला या बाल कृष्ण की लीला पर आधारित सुंदर प्रस्तुति।सांस्कृतिक वेशभूषा प्रदर्शन: ग्रामीण परिधानों और ब्रज संस्कृति की झलक दिखाने वाला फैशन शो।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

7 मार्च 2025 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एक शॉर्ट फिल्म लांच

आज की महिला केवल घर-परिवार तक सीमित नहीं रह गई है। वह अपने जीवन की दिशा खुद तय कर रही है। आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल आर्थिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और अपनी पहचान बनाने की शक्ति भी है। इसी भावना को सशक्त करने के लिए शॉर्ट मूवी "आत्मनिर्भर नारी" बनाई जा सकती है।इस फिल्म में दिखाया जा सकता है कि एक सामान्य महिला, जो पहले अपने सपनों को समाज के डर और सीमाओं में दबा देती है, कैसे अपने अंदर की शक्ति को पहचानकर आगे बढ़ती है। वह अपने हुनर —चाहे सिलाई हो, मेकअप आर्ट, कला-कौशल, घर का कारोबार या कोई नई तकनीक— के माध्यम से अपना जीवन बदलती है।फिल्म का उद्देश्य यह संदेश देना है कि हर महिला में असीम संभावनाएँ छिपी होती हैं। आत्मनिर्भरता केवल कमाने का साधन नहीं, बल्कि सम्मान और आत्मविश्वास की पहचान है। जब महिला अपने पैरों पर खड़ी होती है, तो उसका परिवार, समाज और राष्ट्र सभी प्रगति की दिशा में बढ़ते हैं।यह मूवी महिलाओं को यह सोचने पर प्रेरित करेगी—"अगर उसने कर दिखाया, तो मैं क्यों नहीं?"

इससे जुड़ी कार्यशाला या प्रेरक चर्चा के माध्यम से महिलाओं को व्यावहारिक उदाहरण दिए जा सकते हैं कि वे छोटे-छोटे कदमों से भी कैसे आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

स्वयं सिद्धा कार्यक्रम

5 अक्टूबर गरबा महोत्सव2025

नवरात्रि का पर्व मां दुर्गा की शक्ति और भक्ति का उत्सव है, जिसमें गरबा का नृत्य मात्र मनोरंजन नहीं बल्कि एक गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। गरबा शब्द संस्कृत के "गर्भ" से आया है, जिसका अर्थ है गर्भ या अंदर का दीप, जो नारी शक्ति और सृजन के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। नवरात्रि में मिट्टी के मटके (दीपगर्भ) में दीप जलाकर उसके चारों ओर महिलाएं गरबा करती हैं, जो जीवन के चक्र और मातृशक्ति की उपासना दर्शाता है। यह नृत्य मां दुर्गा की भक्ति और शक्ति का आदर करता है, जिसके माध्यम से महिलाओं का समूह सामूहिक ऊर्जा और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ता है???.गरबा द्वारा संस्कृति से जुड़ाव के उपायगरबा की शुरुआत गरभ दीप के चारों ओर होती है, जो जीवन और सृजन का प्रतीक है। महिला मंडल को इस अर्थ और गरबा के सांस्कृतिक महत्व को समझाना आवश्यक है, ताकि वे इस नृत्य को भक्ति और सम्मान के साथ करें??।गरबा नृत्य में पारंपरिक वेशभूषा पहनाने से संस्कृति का जीवंत अनुभव होता है, जैसे चणिया-चोली और कोटिया आदि पारंपरिक वस्त्र, जो सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं?।गरबा के दौरान मां दुर्गा की नौ स्वरूपों की पूजा और उनके भक्ति गीतों के माध्यम से नृत्य करना महिलाओं को अपने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ता है??।

स्वयं सिद्धा
द्वारा किए गए कार्यक्रम

16 जून जबलपुर संस्कृत परिधान कार्यक्रम

21 जून 2024 गुरु पूर्णिमा महोत्सव जबलपुर महाकौशल यूनिवर्सिटी

26 27 जून फाउंटेन मेकिंग वर्कशॉप

3 अगस्त 5000 वृक्षारोपण ओशो पहाड़ी सागर

7 मार्च 2025 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर एक शॉर्ट फिल्म लांच

18 अगस्त 2024 फिटनेस के साथ भक्ति का रंग कार्यक्रम. सागर

17 18 अक्टूबर. 2024 अहिल्या माता पर चित्रकला प्रदर्शनी. जबलपुर

16 नवंबर 2024अंकूट महोत्सव सागर
11 मार्च 2025 फाग उत्सव. सागर

28 मई 2025 मेरी मां मातृ दिवस कार्यक्रम. सागर

22 अगस्त2025 कृष्णाजन्मोत्सव सागर

18 दिसंबर 2024 मेकअप वर्कशॉप एक कदम आत्मनिर्भरता की ओर सागर

5. 5 अक्टूबर गरबा महोत्सव